शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

यूरोप में हिन्दी शोध

एकता (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़, भारत

शोध संक्षेप

भारत विविधताओं वाला देश है। यहाँ अलग-अलग धर्म-जाति के लोग एकसाथ रहते हैं। इतनी विविधताओं को अपने अंदर समेटने के कारण भी विदेशी भारत की ओर आकर्षित होते रहे हैं। विदेशों में भारतीय धर्म के प्रति झुकाव बढ़ता जा रहा है। भारतीय धर्मों को जानने की जिज्ञासा उनमें शुरू से ही रही है। अपने इसी आध्यात्मिक झुकाव के कारण वे भौतिक विकास व व्यक्तिगत सफलता से परे हटकर जीवन का मूल अर्थ जानना चाहते हैं। अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए वे न केवल हिंदी भाषा सीख रहे हैं, बल्कि हिंदी के आदिकालीन, मध्यकालीन और आधुनिक साहित्यकारों को अपने शोध प्रबंध का विषय बना रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में विदेशों में हिन्दी में होने वाले शोध कार्यों का विश्लेषण किया गया है।

शोध की श्रेणी

हिन्दी से अनेक देशों में जो लोग जुड़े हुए हैं उन्हें दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :

1 प्रवासी भारतीय - भावनात्मक स्तर पर हिंदी भाषा से जुड़े हुए साहित्यकारों की गिनती इस श्रेणी में होती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, मोरिश्सस, फ़िजी, सूरीनाम, गुयाना आदि ऐसे कई देश हैं जहाँ भारतवासियों की संख्या बहुत अधिक है। वहाँ रहकर भी वसुधा डालमिया, डॉ. सुषम बेदी, डॉ. नीलाक्षी फुकन, प्रो. श्याम मनोहर पाण्डे जैसे हिन्दी विद्वान हिन्दी शोध कार्य में लगे हुए हैं।

2 विदेशी - ऐसे साहित्यकार जो हिन्दी भाषा का अध्ययन-अध्यापन शुद्ध भाषायी एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से करते हैं, जैसे इमरै बंघा (हंगरी), डॉ॰ रूपर्ट स्नेल (संयुक्त राष्ट्र अमेरिका), प्रो. दानुता इस्तासिक (पौलैंड), प्रो. एनी मोन्तोत (फ्रांस), प्रो. फ्रांचेस्का ओर्सीनी (इंग्लैंड) आदि। इस प्रकार यूरोप, एशिया एवं अफ्रीका आदि के अनेक देशों में भी इस दृष्टि से हिन्दी में शोध कार्य हो रहा है।

शोध दो प्रकार के होते हैं - औपचारिक व अनौपचारिक शोध। औपचारिक शोध में संस्थानों में किया जाने वाला सोपाधिक शोध आता है, जैसे ओदोंलेन स्मेकल द्वारा हिन्दी लोक साहित्य और आंचलिक उपन्यास पर किया गया शोध या प्रो. किम वू जो द्वारा कृत भक्ति और नारी पर किया गया शोध आदि। अनौपचारिक शोध स्वतंत्र रूप से व्यक्तिगत जिज्ञासाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है या अपनी पेशेगत योग्यता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, वसुधा डालमिया व इमरै बंघा या रूपर्ट स्नेल आदि ने ऐसे अनेक अनौपचारिक शोध पथ तय किए हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत में हिन्दी से संबन्धित उच्च स्तरीय शोध हो रहा है, जिससे

हम सब अवगत हैं, लेकिन भारत के साथ-साथ उसके पड़ोसी देशों या महाद्वीपों में भी हिन्दी शोध बड़ी तेजी से फल-फूल रहा है।

हिंदी-शोध में विदेशियों का अवदान

प्राचीन काल से ही विदेशियों का रुझान हिन्दी शोध की ओर रहा है। गार्सा द तासी, जॉर्ज ग्रियर्सन, तेसि तारी, फ़ादर कामिले बुल्के आदि अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। समय के साथ-साथ हिन्दी में शोध करने वाले विदेशियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। आज जब हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी शोध की बात करते हैं तो इमरै बंघा, डॉ. रूपर्ट स्नेल, प्रो. दानुता इस्तासिक, प्रो. एनी मोन्तोत, प्रो॰ फ़्रांचेस्का ओरसेनी आदि विद्वानों का नाम अनायास ही हमारी जुबान पर आ जाता है।

प्रारम्भ में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध में जो रुचि केवल हिन्दी व्याकरण में दिखाई देती है, वही रुचि वर्तमान समय में हिन्दी के मध्यकालीन व आधुनिक साहित्य में भी दिखाई दे रही है। यद्यपि हिन्दी भाषा को लेकर वर्तमान समय में भी विदेशों में शोध हो रहे हैं, परंतु विदेशियों के उत्साह व रुचि के कारण यह शोध अब गहन रूप लेता जा रहा है। आज स्वतंत्र शोध विश्वविद्यालयों से जुड़ गया है और कहीं-न-कहीं इसका उद्देश्य भारत के अतीत, वर्तमान व भविष्य को समझना है। शोध का स्वरूप बदलता जा रहा है। यह डिग्री ओरिएंटिड बनता जा रहा है, परंतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा हिन्दी शोध कई मायनों में प्रेरक सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त वर्तमान शोधार्थी केवल एक विषय पर नहीं बल्कि एक साथ अनेक विषयों पर काम करते हुए देखे जा सकते हैं।

सन 2010 में नयी दिल्ली स्थित जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में लंदन विश्वविद्यालय के एसोएएस (स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़) की प्रोफ़ेसर फ़्रांचेस्का ओरसेनी ने अपने व्याख्यान देते हुए कहा कि यूरोपीय देशों मे छात्रों के बीच हिन्दी का आकर्षण लगातार बढ़ता जा रहा है।

खासकर 19वीं सदी के साहित्य के प्रति। फ़्रांचेस्का ओरसेनी ने '1920-1930 में हिन्दी के प्रसार विषय में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की और 'उत्तर भारत का साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास (1450-1650) विषय पर भी शोध कार्य किया। इनके अतिरिक्त डॉ. रूपर्ट स्नेल (स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़, लंदन विश्वविद्यालय) ने हिन्दी भाषा और साहित्य, मध्य युगीन हिन्दी कृष्ण काव्य, ब्रज वैष्णव साहित्य और इनके अनुष्ठान परंपरा पर शोध कार्य किया। डॉ. ओलेना मोत्रिचेंको ने 'भाषा शास्त्र' को अपने शोध का विषय बनाया। वारसा विश्वविद्यालय के प्रो. दानुता इस्तासिक का शोध विषय 'आधुनिक हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक टकराव का वर्णन' रहा है।

डॉ.केरिन शोमर ने तो आल्हा को यूरोप में होमर के ओजस्वी काव्य इलियट और ओडिसी के समकक्ष स्थान दिया है। यूरोप में बहुत से परिवार हमसे अधिक शुद्ध हिन्दी बोलते हैं। डॉ. ओदोंलेन स्मेकल को तो भारतीय कहना अनुचित न होगा, क्योंकि उन्होंने भारतीय आंचलिकता को अपने शोध का क्षेत्र बनाया, जिसके लिए उन्होंने भारत को बहुत करीब से देखा है। उन्होंने हिन्दी लोकसाहित्य और आंचलिक उपन्यास पर स्वतंत्र शोध किया है।

विदेशी शोधार्थियों में हिन्दी साहित्य के मध्यकाल को लेकर खासा उत्साह देखा जा सकता है, खासकर भक्तिकाल की ओर। यूरोप के अनेक विदेशी शोधार्थी ऐसे भी हैं, जिन्होंने तुलसीदास व

उनकी रचनाओं का बहुत गहन अध्ययन किया है। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

इटली के डॉ॰ बी. स्टिविक ने 'वैराग्य संदीपनी' व 'दोहवाली' का विशेष अध्ययन किया है। इंग्लैंड के डॉ. एफ. आलचिन ने 'तुलसी का रहस्यवाद' विषय को अपना शोध क्षेत्र बनाया, वहीं डॉ. लुईजिपियों तेस्सी तोरी ने 'रामचरितमानस' का अध्ययन (तुलसीदास पर शोध प्रबंध) किया। लंदन विश्वविद्यालय के डॉ. जे॰ एन. कारपेंटर ने 'द थियोलोजी ऑफ तुलसीदास' पर डॉक्टर ऑफ डिविनिटी की उपाधि प्राप्त की। चेक विद्वान डॉ. ब्लादिमिर मिलनर ने 'तुलसी इतिहास (1450 से 1650 तक)' पर शोध कार्य किया।

प्रारम्भ में विदेशी शोधार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा में शोध किए जा रहे थे, वहीं समय के साथ-साथ उनकी रुचि में भी परिवर्तन दिखाई देता है और उनका शोध क्षेत्र भाषा के दायरे से बाहर निकल कर हिन्दी साहित्य के मध्यकाल व आधुनिक काल की ओर भी बढ़ा। आधुनिक काल की लगभग सभी विधाओं पर विदेशों में शोध कार्य चल रहा है। निकोलस बलवीर ने हिन्दी खड़ी बोली का भाषीय अध्ययन में डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की। पोलैंड के डॉ. मारजैना ने हिन्दी सिनेमा, रंगमंच, समकालीन हिन्दी साहित्य और भाषा शिक्षण पर शोध कार्य किया। हीड़ेलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी के प्रो. डॉ. लोठार लुत्से ने हिन्दी राइटिंग इन पोस्ट कोलोनियल इंडिया पर शोध कार्य किया। चार्ल्स विश्वविद्यालय के रादका त्सलाब्कोवा ने 'आधुनिक हिन्दी नाटक विशेषकर लक्ष्मीनारायण लाल (अंधा कुआं) पर और इवेता नोवकोवा ने हिन्दू परिवार में बालक का स्थान और नवें दशक की हिन्दी कहानी में इसका चित्रण पर एम. ए. की थीसिस लिखी। एलेना टेयलोरोवा ने जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों पर शोध कार्य किया। मिखाएला वान्योवा ने 'अमृतराय और नयी कहानी के विषय में लिखा। मारगरिता वक्रमनोवा ने कबीर की कविता पर व लुकाश ख्मेलिक ने मीराबाई पर बी.ए. की थीसिस लिखी।

वारसा विश्वविद्यालय के तात्याना रुतकोवस्का ने 'हिंदी मध्यकालीन साहित्य की मूल विशेषताएँ' पर तथा आगन्येशका कोवाल्स्का सोनी ने 'हिंदी के नए साहित्य में बुद्धिजीवी वर्ग का नायक सांस्कृतिक व्यक्तित्व का सवाल' पर शोध कार्य किया।

क्राक्रूव विश्वविद्यालय के प्रो.तादेऊ पोवोज्यनाक ने लोवारी बोली का व्याकरण (जिप्सी लोगों की भाषा केंद्र में थी) पर शोध कार्य किया। डॉ॰ पेमेक प्येकासरकी ने हिन्दी शब्दावली के उपक्षेत्रों का 'सांख्यिकी निरूपण' विषय पर शोध कार्य किया। रेनाता चेकाल्स्का ने 'तारसप्तक' में संकलित काव्य तथा पोलिश अग्रगामी काव्य की तुलना की। अगन्येषका कुच्क्येविचफश ने हिन्दी के फारसी-अरबी संकर शब्द पर कार्य किया। इमरे बंघा ने रीतिकालीन कवि घनानंद पर व मारिओला ओफरीदी ने हिन्दी पत्रकारिता का आठवाँ दशक विषय पर शोध कार्य किया।

इनके अतिरिक्त 'ढोला मारू रा दुहा' में मध्यकालीन राजस्थानी समाज का वर्णन, तुलसीकृत रामचरितमानस में महिलाओं का जगत, मीराबाई की पदावली, जयशंकर प्रसाद की कामायनी में बुद्धिवाद और हृदयवाद, हिन्दी फिल्मों की समालोचना आदि विषयों से संबन्धित शोध प्रबंध वारसा विश्वविद्यालय के भारत विद्या विभाग में किए जा रहे हैं।

उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त यूरोप मे ऐसे अनेक विश्वविद्यालय हैं, जहाँ हिन्दी में अनेक नवीन विषयों पर शोध किया जा रहा है। इन

विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन व शोध की आर्थिक व्यवस्था भले ही उनकी सरकारों द्वारा की जाती है, लेकिन इन विदेशी हिन्दी विद्वानों ने अपना सारा जीवन निस्वार्थ भाव से हिन्दी को समर्पित कर दिया और हिन्दी के अनुराग में वे इतना रंग गए कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार से उन्हें प्रसन्नता होती है व हिन्दी के ह्रास से दुख भी होता है। उन्हें हिन्दी से अपनी मातृभाषा की तरह लगाव हो गया है। हिन्दी के ऐसे अनुरागियों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम प्रतीत होती है। हिन्दी शोध से संबन्धित यूरोपीय विश्वविद्यालयों व विद्वानों की सूची इस प्रकार है:

यूरोपीय विश्वविद्यालय

1 केम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
2 लीपजिंग कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय, जर्मनी
3 लेनिनग्राद स्टेट विश्वविद्यालय, रूस
4 मास्को विश्वविद्यालय, रूस
5 हम्बोल्ड विश्वविद्यालय, बर्लिन, जर्मनी,
6 लंदन विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
7 न्यूयार्क विश्वविद्यालय, हेसलिंगटोन, इंग्लैंड
8 हेदेल्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
9 मेंचेस्टर विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
10 एम्सटर्डम विश्वविद्यालय, हॉलैंड
11 लीडेन विश्वविद्यालय, हॉलैंड
12 लुसाने विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड
13 सेन्ट्रल इंग्लैंड विश्वविद्यालय, बर्मिंघम
14 बर्मिंघम विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
15 सर्रे विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
16 गेंट विश्वविद्यालय, बेल्जियम
17 पेरिस दौफिन विश्वविद्यालय, फ़्रांस
18 जुबजाना विश्वविद्यालय, सलोवेनिया
19 ओरिएंटल विश्वविद्यालय, नेपल्स, इटली
20 तबिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी
21 कोलोगन विश्वविद्यालय, जर्मनी
22 बान विश्वविद्यालय, जर्मनी
23 नेशनल ट्रास स्केचेंकों क्यीव विश्वविद्यालय, यूक्रेन
24 वारसा विश्वविद्यालय, पोलैंड
25 टयूरिन विश्वविद्यालय, इटली
26 फ्री विश्वविद्यालय, बर्लिन, जर्मनी
27 ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड
28 एथेंस विश्वविद्यालय, ग्रीस
29 एपेक्स विश्वविद्यालय, हंगरी
30 जाग्रेब विश्वविद्यालय, साउथ ईस्टर्न यूरोप
31 सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया
32 चार्ल्स विश्वविद्यालय, चेक गणराज्य
33 मिलान विश्वविद्यालय, इटली
34 वेनिस विश्वविद्यालय, इटली
35 पेरिस विश्वविद्यालय, फ़्रांस
36 बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, रोमानिया
37 एल्ते विश्वविद्यालय, हंगरी
38 याग्येलोनियन विश्वविद्यालय, क्राक्रूव, पोलैंड
39 एडम मिक्कीएविक्ज़ विश्वविद्यालय, पोलैंड
40 ओत्वोस लोरेंद विश्वविद्यालय, हंगरी
41 सपिएन्त्सिया विश्वविद्यालय, रोम, इटली
42 ट्रांसिल्वेनिया विश्वविद्यालय, रोमानिया
43 विल्नियस विश्वविद्यालय, लिथुयानिया
44 कोनिग्सबर्ग विश्वविद्यालय, रूस

यूरोपीय विद्वान

1 डॉ. रूपर्ट स्नेल
2 डॉ. ओलेना मोत्रिचेंको
3 प्रो. दानुता इस्तासिक
4 प्रो. पिनुसिया कराची
5 प्रो. एनी मोन्तोत
6 प्रो. फ्रांसिस्का ओर्सिनि
7 प्रो. रेचेल डायर
8 डॉ. बिलजाना ज़ानीच

9 डॉ. डिमिट्रायस वासिलिएदिस
10 डॉ. एवा आरादी
11 डॉ. मिलेना ब्रातोयेवा
12 श्रीमती अलेस्या मकोव्स्काया
13 डॉ. स्वेतिस्लव कोस्तिच
14 सुश्री जस्तिना कुरोव्सका
15 डॉ॰ इमरे बंघा
16 प्रो. ली जंग.हो
17 प्रो. किम वू जो
18 डॉ. गुजेल स्ट्रेलकोवा
19 डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव
20 डॉ. कृष्ण कुमार
21 डॉ. स्वमदनलाल मधु
22 डॉ. मारिया नेज्यैशी
23 डॉ. अल्कसांदर सेंकेविच
24 ओदोंलेन स्मेकल
25 डॉ. बी. स्टिविक
26 डॉ. एफ. आलचिन
27 डॉ. जे. एन. कारपेंटर
28 प्रो. दोनातेल्ला दोल्चीनी
29 निकोलस बलवीर
30 डॉ. ब्लादिमिर मिलनर
31 बैर्तिल तिक्कनेन
32 प्रो. वृस्की ;मारिया क्रिस्टाफरद्ध
33 डॉ. मोहन कान्त गौतम
34 डॉ. मोनियार विलियम्स
35 डॉ. मारजैना
36 डॉ. येवगेनी पेत्रोविच चेलीशेव
37 डॉ. लोठार लुत्से
38 प्रोफेसर लौरेंत्स्यु तेबान
39 डॉ. साबिना पोपलार्न
40 रादका त्सलाब्कोवा
41 इवेता नोवकोवा
42 एलेना टेयलोरोवा
43 मिखाएला वान्योवा
44 स्तानीस्लाव मुंदिल
45 मारगरिता वक्रमनोवा
46 लुकाश ख्मेलिक
47 तात्याना रुतकोवस्का
48 आलित्स्या कार्लिकोव्स्का
49 आगन्येशका कोवाल्स्का.सोनी
50 प्रो. तादेऊष पोवोज्यनाक
51 डॉ. प्षेमेक प्येकासरकी
52 अगन्येषका कुच्क्येविच.फश
53 मोनिका ब्रोविर्चिक
54 अलेक्सान्द्र चोमा दे कोरोश
55 सर औरेल श्तैइन
56 डॉ. आपार्द दैबरेत्सेनी
57 प्रो. मार्गेट गात्स्लाफ
58 प्रो. शोकर
59 प्रो. तुर्बियानी
60 साजानोवा
61 प्रो. जोहान्स ब्रोखोसर्ट
62 रेनाता चेकाल्स्का
63 इरेने विटिंग जाहरा
64 मारिओला ओफरीदी

कुछ वर्षों से हिन्दी का वैश्विक मंच विशाल से विशालतर होता जा रहा है। राष्ट्र संघ में हिन्दी की स्थापना का प्रयास विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन आदि ऐसी घटनाएं हैं, जिनसे हिन्दी की क्षमता का सहज ही ज्ञान हो जाता है। अब हिन्दी एक देशीय नहीं अपितु बहु देशीय भाषा का रूप ले चुकी है। भाषा और साहित्य की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती। इसीलिए हिन्दी भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम को लक्ष्य करके प्रसारित हो रही है। विश्व की इस महान् भाषा के विकास के लिए विभिन्न देशों में संचार साधन के रूप में आकाशवाणी, दूरदर्शन के साथ-

साथ पत्र पत्रिकाओं का खुलकर सहयोग लिया जा रहा है। हिन्दी के बढ़ते प्रभाव के कारण ही आज विदेशों में हिन्दी को महत्व दिया जा रहा है।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध पत्र के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आज विश्व में लगभग सभी देशों में हिन्दी का अध्ययन.अध्यापन व शोध कार्य हो रहा है, फिर चाहे उसके पीछे राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक कोई भी कारण हो। अब विदेशों में स्वाध्याय के लिए भी हिन्दी में शोध हो रहा है। हालांकि व्यावसायिक कारण को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता, परंतु ऐसे शोधार्थियों की भी कोई कमी नहीं जो हिन्दी से जुड़ाव महसूस करते हैं। अध्यात्म में उनकी बढ़ती रुचि भी उन्हें हिन्दी शोध की ओर आकर्षित कर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का पक्ष मजबूत करने, इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने व इसे विश्व मान्यता दिलाने के लिए 1975 से विश्व हिन्दी सम्मेलनों का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता है। इससे विदेशियों, खासकर भारतीय प्रवासियों को भी भावनात्मक स्तर पर हिन्दी भाषा से जुडने का मौका मिलता है और हिन्दी के प्रति विदेशों मे आकर्षण भी बढ़ता है।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1 One india Hindi समाचार https://hindi.oneindia.com/news/2010/01/20/1263954709.html, *मई 12, 2018*

2 Awadh Sanskriti Vishwakosh-2- सूर्यप्रसाद दीक्षित https://books.google.co.in/books?id=TZbQDQAAQBAJ&pg=PA97&lpg=PA97&dq=डॉ.+केरिन+शोमर&source

3 बंघा, इमरे, संपादक, मध्य और पूर्वी यूरोप में हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2007, पृष्ठ 40

प्रस्तुत शोध.पत्र में विश्वविद्यालयों व विद्वानों की सूची निम्नलिखित पुस्तकों व वेबसाइट से एकत्रित की गयी हैं :

विश्व हिन्दी डाटाबेस http://www.vishwahindidb.com/list_institutions.aspx (http://www.vishwahindidb.com/show_expertise.aspx?expertise=%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF) *May 5, 2018*

4 बंघा, इमरे, संपादक, मध्य और पूर्वी यूरोप में हिन्दी, वाणी प्रकाशनए नयी दिल्ली, 2007

दीक्षित सूर्यप्रसाद विश्व पटल पर हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013

सिंह चरणजीत, सण्ढए वैश्वीकरण एवं हिन्दी का विकास https://obcindia.co.in/obc_rajbhasha/images/upload/pdfs/201711131359040772801001510561744.pdf, *May 25, 2018*

5 विश्व की हिन्दी पत्र.पत्रिकाएँ, डॉ॰ कामता कमलेश www.bharatdiscovery.org.in http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B5_%E0%A4%95%E0%A5%80_%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%8F%E0%A4%81_%E0%A4%A1%E0%A5%89._%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%A4%E0%A4%BE_%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%B6, *13/1/2019*